

बूंदी चित्रशाला के भित्तिचित्रों में गज अंकन

सोहन लाल बलाई*

सह आचार्य – चित्रकला, राजकीय मूक बधिर महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: slbarala@gmail.com

Citation: बलाई, सोहन (2026). बूंदी चित्रशाला के भित्तिचित्रों में गज अंकन. *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science*, 08(03(II)), 200–203.

सार

राजस्थानी चित्रशैली की हाड़ौती शैली की कला परंपरा के अंतर्गत बूंदी शैली भित्तिचित्रों के इतिहास में कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। बूंदी शहर में पहाड़ी पर गढ़ पैलेस परिसर में स्थित चित्रशाला (उम्मेद महल) अपने भित्तिचित्रों के उत्कृष्ट संरक्षण और अनूठी विषय-वस्तु के लिए कला के इतिहास में वैश्विक पहचान रखती है। चित्रशाला की दीवारों पर गज का अंकन किया गया है। इस शोध पत्र में चित्रशाला में चित्रित हाथियों की कलात्मक, रूपात्मक विशेषताओं, उनकी विभिन्न शारीरिक मुद्राओं (जैसे मल्ल-युद्ध, मदमस्त अवस्था, जलक्रीड़ा) आदि का अंकन एवं हाथियों के अंकन में असाधारण गतिशीलता का स्वतंत्र कलात्मक एवं तकनीकी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।।

शब्दकोश: मदमस्त, चित्रशाला, गज, अंकन, रूपात्मक, भित्तिचित्र, मल्ल-युद्ध, उत्कृष्ट, संरक्षण।

प्रस्तावना

भारतीय उपमहाद्वीप की कला में गज अर्थात हाथी हमेशा से शक्ति, राजसी वैभव, बुद्धिमत्ता और धार्मिक पवित्रता का प्रतीक रहा है। भारत में मौर्यकालीन मौर्य मूर्तिकला से लेकर अजंता की गुफाओं और मुगल लघुचित्रों तक गज के अंकन की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। परंतु 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महाराव उम्मेद सिंह (1748–1770 ई.) के काल में निर्मित बूंदी की चित्रशाला की दीवारों पर हाथियों को जिस कलात्मक दृष्टि से जीवंतता, उन्मुक्तता और गतिशीलता के साथ अंकन किया गया है। यह सम्पूर्ण भारतीय चित्रकला के इतिहास में अद्वितीय है। ब्रिटिश लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने 1891 में अपनी यात्रा विवरण रश्मजजमते वडिंतुनमश में गढ़ पैलेस के इन भित्तिचित्रों को देखकर लिखा था कि यह इंसानों के काम नहीं बल्कि परियों और जिन्नों द्वारा बनाए गए महल और चित्र प्रतीत होते हैं। विशेष रूप से फर्श के समानांतर बने हाथियों के मल्ल-युद्ध के चित्रों ने उन्हें चमत्कृत किया था।

शोध समस्या एवं अनुसंधान अंतराल

यद्यपि मिलो सी. बीच (डपसव ६ ठमबी) और जोआचिम के. बौत्ज (श्रवंबीपउ ज्ञ. ठनज्रम) जैसे अंतरराष्ट्रीय विद्वानों ने हाड़ौती कला पर महत्वपूर्ण कार्य किए हैं, परंतु उनका ध्यान मुख्य रूप से लघुचित्रों (डपदपंजनतमे) और बादल महल के शुरुआती चित्रों पर केंद्रित रहा। चित्रशाला के निचले पैनल्स पर विशेष रूप

से केंद्रित गज अंकन के रूपात्मक और संरचनात्मक पहलुओं पर कोई स्वतंत्र शोध पत्र अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है। यह शोध पत्र इसी अनुसंधान अंतराल (त्मेमंतबी ळंच) को भरने का एक मौलिक प्रयास किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- बूंदी चित्रशाला में अंकित गजों की विभिन्न मुद्राओं का श्रेणीबद्ध अध्ययन करना।
- हाथियों के शारीरिक गठन और गतिशीलता को दर्शाने में प्रयुक्त कलात्मक रेखाओं का विश्लेषण करना।
- चित्रों में प्रयुक्त प्राकृतिक व खनिज रंगों की तकनीकी विशेषताओं को रेखांकित करना।

गज-अंकन की विषय-वस्तु एवं रूपात्मक श्रेणियाँ

चित्रशाला की दीवारों पर हाथियों का अंकन केवल पृष्ठभूमि या आनुषंगिक तत्वों के रूप में नहीं है, बल्कि उन्हें मुख्य विषय के रूप में स्थापित किया गया है। इन्हें मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

- **मल्ल-युद्ध एवं उग्र मुद्राएँ** – यह चित्रशाला के सबसे प्रभावशाली चित्र हैं। दीवारों के सबसे निचले हिस्से पर दो विशालकाय हाथियों को आमने-सामने एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए दिखाया गया है। रेखाओं का लचीलापन कलाकार ने हाथी की सूँढ़ के घुमाव और पैरों के घर्षण को इतनी सटीकता से खींचा है कि दर्शक को पशु के भारी वजन और उसकी ताकत का अहसास होता है।

मदमस्त अवस्था कुछ चित्रों में हाथियों को बेकाबू होकर अपनी जंजीरें तोड़ते हुए, महावतों को हवा में उछालते हुए और सैनिकों को खदेड़ते हुए दिखाया गया है। हाथी की छोटी, क्रोधित आँखों का अंकन यहाँ के कलाकारों की सूक्ष्म अवलोकन क्षमता को दर्शाता है।



- **शाही जुलूस और धार्मिक सन्दर्भ** – मध्यम और ऊपरी पैनल्स पर धार्मिक आख्यानों के साथ हाथियों का भव्य अंकन किया गया है।

गजलक्ष्मी का रूप कमल के आसन पर विराजमान देवी लक्ष्मी के दोनों ओर दो श्वेत हाथी अपनी सूँढ़ में जल के कलश लेकर उनका अभिषेक कर रहे हैं। यहाँ हाथियों के अंगों में एक दिव्य शांति और सौम्यता दिखाई देती है।



शाही सवारी राजाओं के जुलूस और राम-सीता विवाह के दृश्यों में हाथियों को अत्यंत सुसंस्कृत, सुनहरे हौदों और कीमती झूलों से ढका हुआ दिखाया गया है।

- **जलक्रीड़ा और प्राकृतिक परिवेश**

चित्रशाला के कुछ भित्तिचित्रों में हाथियों को तालाबों या नदियों में तैरते हुए दिखाया गया है। वे अपनी सूंढ़ से पानी उड़ा रहे हैं और आसपास कमल के फूल खिले हैं। यह दृश्य हाथियों के कोमल और आनंदित स्वभाव को प्रदर्शित करता है, जो उनके युद्धकालीन उग्र रूप के बिल्कुल विपरीत है।



तकनीकी और शैलीगत विश्लेषण

- **रंग योजना** — बूंदी चित्रशाला की सबसे बड़ी विशेषता इसके रंगों का आज भी जीवित रहना है। हाथियों के चित्रण के लिए काले, गहरे धूसर, गेरू और सफेद रंग का प्रयोग किया गया है। हाथियों के गहरे शरीर को उभारने के लिए पृष्ठभूमि में फिरोजी और सघन हरे रंग का उपयोग किया गया है, जो दक्षिण कला शैली के प्रभाव को दर्शाता है।
- **प्रयुक्त सामग्री** — ये चित्र फ्रेस्को बुओनो और फ्रेस्को सेवको की मिश्रित भित्ति तकनीक से बने हैं, जहाँ चूने के गीले प्लास्टर पर स्थानीय खनिजों (जैसे काजल, हिरमिरच, लाजवर्द) और असली सोने व चांदी के वर्क की स्याही का उपयोग किया गया है।
- **बोर्डर कला** — प्रत्येक गज-दृश्य को एक-दूसरे से अलग करने के लिए और उसे एक स्वतंत्र पेंटिंग का रूप देने के लिए चारों ओर बारीक फूलों, कलियों और लताओं की हाशिया कला बनाई गई है, जो मुगल लघुचित्र कला की याद दिलाती है।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि बूंदी चित्रशाला के भित्तिचित्रों में गज अंकन केवल एक पशु का चित्रण नहीं है, बल्कि वह तत्कालीन हाड़ौती के शौर्य, स्थापत्य और कलात्मक स्वतंत्रता का जीवंत दस्तावेज है। मुगल कला की सूक्ष्मता और दक्षिण कला की रंगत को आत्मसात करने के बावजूद, यहाँ के स्थानीय कलाकारों ने हाथियों की शारीरिक संरचना और उनकी मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं (क्रोध, आनंद, शांति) को जिस मौलिकता के साथ दीवारों पर चित्रित किया वह इस कला शैली को भारतीय कला इतिहास में सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करता है। यह विषय भविष्य के शोधार्थियों के लिए कला इतिहास के अंतः विषय अध्ययन के नवीन द्वार खोलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल आर. ए. : कला विलास, भारतीय चित्रकला का विवेचन, लायल बुक्स, मेरठ, 1995
2. उपाध्याय, डॉ. विधासागर : भारतीय चित्रकला की कहानी, जयपुर, 1999
3. प्रताप डॉ. रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, 2022
4. नीरज, डॉ. जयसिंह, शर्मा : राजस्थानी चित्रकला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2015
5. कुमार, प्रमोद — राजस्थान की भित्ति चित्रकला परंपरा, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर (2015)
6. Beach, Milo C- Rajput Painting at Bundi and Kota- Ascona: Artibus Asiae (1974)

